

भाषा की समझ तथा आर्थिक माध्यम का भाषा विकास (F - 5)

[इकाई - 1 भाषा की प्रकृति]

* भाषा का अर्थ

भाषा एक माद्यसंग है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों को एक दूसरे से व्यवह कर सकते हैं। एक मनुष्य ही है जो भाषा का प्रयोग करता है। यह (भाषा) मानवीय काला कृति है। भाषा का उत्पत्ति मनमाने रूप में किया गया है, इसका कोई प्राकृतिक संबंध नहीं होता है। एक ही वंश्टु की अलगा - अलगा भाषाओं में अलगा - अलग नाम से जाना जाता है। जैसे इंग्रिजी में Book और हिन्दी में किताब कहते हैं। एक एक भाषा की अपनी एक लिपि होती है। जिस माद्यसंग में उस भाषा को लिया जाता है। हिन्दी देवनागरी लिपि और अंग्रेजी रोमन लिपि में लिखी जाती है।

भाषा का परिभ्राषा

भाषा एक सांकेतिक साधन है - वाणुराम भवसेन

१९०२-१९०३ शहदों द्वारा विचारों का व्यवहारण ही भाषा है - अवीट

⇒ भाषा की प्रकृति

- i) भाषा अजनीय है - वर्चे भाषा की जूनकर जन्म नहीं लेते हैं बल्कि वो जिस भाषा-भाषियों के दीनच जन्म लेते हैं उसी भाषा को जूनकर सीख जाते हैं।
- ii) भाषा सामाजिक प्रक्रिया है - भाषा मानव समुदाय का अमृत उपज है। यह प्राकृतिक नहीं है। इसे समाज के द्वारा बनाया गया है और समाज में ही इसका प्रयोग किया जाता है।
- iii) भाषा अनुकरणजन्य प्रक्रिया है - भाषा अनुकरण द्वारा सीखा जाता है वर्चे माता-पिता, माँ-बहन द्वारा बोली गई वातों को जूनकर बोलने का प्रथास करते हैं।
- iv) भाषा परिवर्तनशील होता है - भाषाएँ परिवर्तन द्वारा नयी शब्दों, पदबोधों एवं वाक्य-रचना किसी भी स्तर पर हो सकता है।
- v) भाषा का कोई आंतरिक रूप नहीं होता है - भाषा विकास के स्तरक द्वारा विकास में विकास करते होते हैं भाषा में कुछ वर्णों के लिखावट में बदलाव लाये जाते हैं। समय के साथ कुछ नए शब्द जोड़े और हटाये जाते हैं। भाषा बोलने में भी परिवर्तन लाया जाता है।

⇒ भाषा के रूप -

i) उच्चारित रूप

ii) लिखित भाषा

* भाषा:- प्रतीकों की वाचक व्यवस्था के रूप में
 - समाज के मान्यता के रूप में
 - संप्रेषण के मान्यता के रूप में

भाषा प्रतीकों की वाचक व्यवस्था को किसी चीज़ को उसके नाम से पुकारने के लिए इसीन प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। जैसे हम पेड़ की पेड़ कहते हैं तो इस मान्यता से हम दूसरों को बताते हैं कि वह पेड़ है। एक भाषा में सक वर्ग का एक नाम रखा जाता है। इस तरह से यह व्यवस्था है। भाषा के द्वारा समाज की विकासत होता है। इससे हम आस-पास की वस्तुओं को जान पाते हैं। उसकी समाज हम में विकासत होता है।

भाषा संप्रेषण का मान्यता है। इसके द्वारा एक व्यक्ति अपनी विचारों, जावों को इसी से अभिव्यक्त कर पाता है। अपने विचारों को बताने के लिए किसी को हुना भी नहीं पड़ता है। एक बोलता है तो इसका सुनने के समाज लेता है। इस तरह हम किसी भी सुनदों पर क्वतंत्र रूप से अपनी बात को कह पाते हैं। इससे बोलने वाले तथा सुनने वाले दोनों का समाज विकासत होता है।

* मानव भाषा और पशु-पक्षियों, पैड-पौदों की भाषा में अंतर

भाषा का माह्यम है जिसके द्वारा कोई संवाद कर सकता है। इसके बिना कोई अपने विचारों की व्यक्ति नहीं कर सकता ही। भाषा के बिना कोई इस जगत की नहीं समझ सकता है। मानव भाषा व्याकरण बहुत एवं नियमबद्ध होती है। इसमें वर्ण, अक्षर, प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। मानव भाषा की इस खासियत के बजह से अंगौजी बोलने वाले हिन्दी और हिन्दी बोलने वाले हिन्दशी भी सकते हैं। केंद्र पशु-पक्षियों, पैड-पौदों की भाषा नियमबद्ध नहीं होती है। उसमें कोई व्यक्ति भी नहीं होता है। अतः शैर का महली नहीं सीख सकती ही। इनका भाषा व्यक्तिगत होता है। शैर दहाड़ सकता है, बिली चूँचूँ-चूँचूँ कर सकती है। यह अपना-अपना भाषा खूद ही प्रयोग कर सकती है।

* भाषा की नियमबद्ध व्यवस्था: द्विन संरचना, शाहद संरचना, वाक्य संरचना, प्रौद्योगिकी (संवाद) संरचना

i) द्विन संरचना - प्रत्येक भाषा में द्विनयों का व्याकरण मिलता है। हिन्दी में कवर और व्यंजन दो का होते हैं। अंगौजी में वोट्टा और consonant नाम से द्विन के दो का मिलते हैं।

अल्पा - अल्पा माध्यमों में एवरों और व्यंजनों की संख्या ज्ञान होती है लोकन संसार के ४२ माध्यमों में एवर तथा व्यंजन होते हैं। शब्द में ४२ सार्थक द्वारों का होने में अवश्य होता है। जिन द्वारों के प्रयोग से शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं, वे सार्थक द्वारों कहलाती हैं।

उदाहरण -	अंग्रेजी	माला	HEEL
	हिन्दी	हिल	हील

प्रत्येक माध्यम के शब्द में एवर तथा व्यंजन द्वारों की संख्या नियमित है। यदि एवर के लिए (V) तथा व्यंजन के लिए (C) संकेत मानेते हैं तो यह संख्या (CVCV) की होती है। अर्थात् दो व्यंजन द्वारों के बीच एक एवर द्वारों आती है। जैसे - कंड → कु + अ + ष + अ

ii) शब्द संरचना - ४२ माध्यमों में शब्दों के भेद होते हैं। साधारण होने वाले एवर माध्यमों में नामे - नामे शब्द नामाण के साथ यास प्राकृत्या होती है। उदाहरण के लिए हिन्दी में शब्दों को कंडा, अवनाम, कृष्ण, विशेषण, कृष्ण-विशेषण, लिंग, वर्चन आदि कोटियों में वर्गीकृत किया जाता है। इसी प्रकार अंग्रेजी में शब्दों को Noun, Pronoun, verb, Adverb, Adjective, Gender आदि कोटियों में वर्गीकृत होता है। ऐसी कोटियों संसार के सभी माध्यमों में होती है। इस आधार पर समस्त माध्यमों में अकर्त्तव्यता पाई जाती है।

संसार के सभी भाषाओं में शहदों का रूपांतरण होता है। उदाहरण के लिए संज्ञा शहदों का विशेषण में रूपांतरण सभी भाषाओं में पाया जाता है। प्रत्येक भाषा के रूपांतरण की अपनी नियम है।

भाषा	संज्ञा	विशेषण
अंग्रेजी	Rain / sun	Rainy / sunny
हिन्दी	श्वा / चंचि	शीता / छीता

iii) वाक्य संरचना - किसी भी भाषा के वाक्य में उपांथत् शब्दों ने धटक जैसे - होता, करा और किया की व्यवस्था से किसी वाक्य की संरचना बनती है। इन धटकों से किसी निश्चित क्रम से ही ने पर ही वाक्य की रचना होती है।

उदाहरण -

- वाक्य i) इकलाव आम खाता है।
- ii) आम इकलाव खाता है।
- iii) खाता इकलाव आम है।

iv) संवाद संरचना - किसी भी दो व्यक्तियों के बीच संवाद की संभव बनाने के लिए नियम होते हैं। यह संभव है कि दो व्यक्तियों द्वारा कही गई बातें दूरीन् शब्दों तथा वाक्य के क्रम पर उपयुक्त हो। लोकन ये बातें संवाद के क्रम पर अर्थहीन हो। उदाहरण -

पहला व्योवत - कहो जाइ क्या हाल है।

दूसरा व्योवत - जानी ला रहा है।

पहला व्योवत - क्या धूंधा कैसा चल रहा है।

दूसरा व्योवत - टमाटे 20 रुपये किलो है।

* माषा की विशेषताएँ

- i) माषा आजित संपर्क है।
- ii) माषा सामाजिक वर्ग है।
- iii) निश्चित से अनन्त की रचना है।
- iv) माषा नियमित होती है।
- v) यह अब ब्यक्तिगत होती है।
- vi) यह दूरीन प्रतीकों का समूह है।
- vii) माषा अल्पकृषीय होता है।

इकाई - 2 माधारी विविदता व बहुभाषिकता

* माधा का बहुभाषिक परिवृश्य : भारत में माधारे के चापा - परिवार

हमारे देश में कई प्रकार की विविदताएँ हैं। माधारी विविदता भी उनमें से कक्ष है। पूरे विश्व में लगभग ५००० माधारे हैं उनमें से करीब १६०० से ओर्धक माधारे भारत में लोली जाती है। भारत के संदर्भ में यह कहना गलत नहीं होगा कि यहाँ आधिकारिक माधारे जानते ही माधारी विविदता हमारे समृद्धि का प्रतीक है। यह भारतीय आरमाकता का आमने-सामने अंग है एक से ओर्धक माधा जानने से व्योक्ति के पास शाहद का महार ही जाता है। जिससे उसके आमाच्योक्ता कीशल का विकास होता है। उसे संवाद करने में आसानी होता है।

हिन्दी माधा का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। संसार में किसी गरु माधा सर्वेक्षण के अनुसार विश्व में हिन्दी का तीसरा व्यान है। भारत में यह लगभग ६० करीब लोगों की माधा है। भारत के हिन्दी माधी क्षेत्र, अन्य राज्यों तथा विदेशों में बड़ी संख्या में लोगों द्वारा हिन्दी माधा का प्रयोग किया जाता है। निमन्तिलका हिन्दी के अंतर्गत आने वाली उपमाधारे के बहुभाषिकता को उपलब्ध करती हैं।

ग्रामा उपग्रामार्थ
हिन्दी (क) पश्चिमी हिन्दी

- प्रमुख बोलियाँ
 i) छड़ी बोली
 ii) भज माषा
 iii) हरियाणी
 iv) कुनूरी
 v) कर्नाटकी

(ख) पुरी हिन्दी

- अवधी
 ii) बंडेडी
 iii) दत्तीसगडी

(ग) राजस्थानी

- i) मूडवाडी
 ii) मेवाती
 iii) मालवी
 iv) जयपुरी

(घ) बिहारी

- i) चौजपुरी
 ii) मगही
 iii) मैथली

(ङ) पहाड़ी

- i) गढ़वाली
 ii) कुमाऊनी
 iii) माइथाली

* बिहार का बहुभाषक परिवर्श

बिहार में भी परिवर्श, बहुभाषकता का है।
बिहार में सूचित : मैथिली, ओंगका, लिज्जता,
मगही और मौजपुरी बोली जाती है। इनके
अतिरिक्त नागपुरी, थारू, कुरमाली आदि बोलियाँ
भी हैं। पहाड़ी भाषाओं में प्रमुख संघाली सुडारी
उरंव, ही, छोड़या आदि हैं।

i) मैथिली - बिहार के सभी भाषाओं में मैथिली का
साहित्य काफी समृद्ध है। इसका क्षेत्र दरभंगा,
सुजपपुर, चापालपुर, मुर्गेर पाण्डया-चंपारण
आदि तक फैला हुआ है। बोलियों के आधार
पर इसे चार भाषा में बोला जा सकता है।
पुरी मैथिली, पश्चिमी मैथिली, उत्तरी मैथिली
तथा दक्षिणी मैथिली।

ii) मगही - यह बिहार के पटना, चपालपुर, मुर्गेर
और गाया जिलों की भाषा ही गया में
प्रमुख रूप से बोली जाने वाली भाषा की
ही मगही कहा जाता है।

iii) मौजपुरी - मौजपुरी का सर्वोदयक प्रयोग चौजपुर
जिले में होता है, इसीलिए इसे चौजपुरी
कहा जाता है। इसका कई अन्य नाम
(पुरी) भी हैं। यह गोरखपुर, दूर्वारया,
दुपड़ा, चोपालगाज, जौनपुर, बालया आदि
क्षेत्रों में भी बोली जाती है।

* माषा और बोली

माषा - माषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों को स्थित करते हैं। यह वह शब्द के द्वारा ही या वाक्य के द्वारा। अशांत शब्द और वाक्य मिलकर माषा बनते हैं। माषा को हमारे वृन्दों में स्थित करते हैं - नीति और मीठक। माषा पूर्ण देश की बोली होती है, जैसे भारत देश की माषा हिन्दी है।

बोली - भारत के अंदर बहुत सारे राज्य हैं और उन राज्यों की अपनी एक अलग ही बोली होती है जैसे - पंजाब की पंजाबी, गुजरात में गुजराती, झारखण्ड में झोजपुरी। बोली का स्थान से कोई संबंध नहीं होता है।

* बहुमार्षकता के आवाम : बोलिक आवाम, शिक्षणशास्त्रीय आवाम

बहुमार्षकता हमारे देश की समृद्धि है। इस भाषकता के सांदर्भ में हम अद्यतनों ने यह सार्वित कर दिया कि जो उच्चे सीखने के दौरान किसी से अधिक माषाओं में कुशलता का विस्तार करते हैं। उनमें सीखने की प्रक्रिया के लाभ ही उच्चनामकता और सामाजिक साहदेन्तता जैसे गुणों का विकास होता है। अतः हमें उच्चों को इसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

⇒ बहुभाषिकता से जुड़ा ही कठ मसला
उत्तराधिकारी भूमि है।

अनेक शिक्षक आर्थिगों ने
 इसे लागू करने की सिफारिश की है। 1968
 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार —

i) प्रथम माध्य - विद्यालय में पहली भाषा जो
 पढ़ाई जाए वो मातृभाषा या क्रौंचीय
 भाषा हो।

ii) द्वितीय भाषा -

a) हिन्दी भाषी राज्यों में द्वितीय भाषा
 कोड से अन्य आष्टुनिक भाषा ही या
 अंगूजी हो।

b) गृह-हिन्दी राज्यों में - द्वितीय भाषा हिन्दी
 या अंगूजी हो।

iii) तृतीय भाषा - हिन्दी भाषायी राज्यों में
 तीसरी भाषा अंगूजी होगी या कठ
 आष्टुनिक भाषतीय भाषा जो द्वितीय
 भाषा के रूप में न पढ़ी जा रही हो।

इस तरह अपनी मूल भावना में द्विमाध्य
 भूमि हिन्दी भाषी राज्यों के लिए हिन्दी,
 अंगूजी और भाषतीय भाषाओं (ग्रामकर
 दीक्षण भाषतीय भाषा) का और गृह-हिन्दी
 राज्यों के लिए द्वितीय भाषा हिन्दी व
 अंगूजी का प्रावधान प्रारूपित करता है।
 इस प्रकार त्रिभाषा भूमि की अलंकार सार

मारत की बहुभाषिक परिवृश्य में भाषाओं जनतंत्र की व्यविकृति की विवालत करती है।

* भाषाओं के संदर्भ में सांख्यिक प्राप्तियाँ
अनुच्छेद ३४३-३५१, आठवीं अनुसूची

सांख्यिक प्राप्तियाँ में धारा ३४३-३५१ तक हिन्दी के राजभाषा रूप का विश्लेषण किया गया है। यानी प्रशासनिक भाषा के व्यवरूपों पर सांख्यिक अपना अनुच्छेद करता है। किंतु देश में यहाँ अनेक भाषा परिवारों की भाषा बोलने वाले के बीच सांख्यिक जनतंत्र है। वहाँ सांख्यिक प्राप्तियाँ इस बात की उनिश्चित भाषाओं के नाम पर धमासान न मार्चे, और यह सुनिश्चित किया विभिन्न अभियाकृत भाषाओं की समुचित स्थान मिला। इसी संदर्भ में आठवीं अनुसूची की व्यवस्था की गई। १९५० में इसमें १४ भाषाएँ जोड़ शामिल किया गया था वाद में ४ और भाषाओं को जोड़ पाया जो इस प्रकार हैं—

i) हिन्दी	xii) पंजाबी	xxi) डोगरी
ii) उड़ीसी	xiii) झारूकृत	xxii) बोडो
iii) असामिया	xiv) सिंधी	
iv) बंगला	xv) तमिल	
v) गुजराती	xvi) तेलुगु	
vi) कॉन्नड़	xvii) कोकणी	
vii) कर्शनीशी	xviii) मणिपुरी	
viii) मलयालम	xix) नेपाली	
ix) मराठी	xx) मैथिली	
x) ओडिया		

⇒ माधा का सांख्यिकीय मूड़ने का भाग

किसी माधा को सांख्यिकीय की आठवीं अनुसूची में शामिल हो जाने पर उस माधा का महत्व बढ़ जाता है। वह माधा रजिस्ट्रेशन का माद्यम बन जाती है। शैक्षिक पाठ्यक्रम में ही उससे प्रभुग्र विद्यान प्राप्त हो जाता है। उस माधा के विकास हेतु सरकारी अनुदान मिलने लगता है। एशिय और स्यनाकारों व प्रतिज्ञावों को नीको मिलने लगता है। केंद्रिय पश्चासानिक क्षेत्र से अंबेडकर परीक्षाओं में उसे माधा के रूप में प्रतिनिधित्व मिलने लगता है। केंद्रिय विज्ञानों में प्रादेशिक माधा - अनुवादक के पदों का सुलगान होने लगता है। एशिय और अफ्रीका में विकास बनजाता है। साहृदय आकर्तुमी में उस माधा को महत्व मिलने लगता है। उस माधा में बनट भी जारी होने लगता है।

* मार्षिक कक्षा और केस एटडी

इहत साई एटडी - एटडी समूह है जो मूल भौतिकी का प्रयोग करते हैं। उनके बच्चे जब विद्यालय में दृश्यता लेते हैं तो उनमें (उनका माधा) और विद्यालयी माधा के विश्वास बनाने की अपेक्षा रहता चाहता।

इकाई-३ बच्चों का आर्थिक भाषा
विकास और विद्यालय में भाषा

* बच्चों के क्षमता तथा बच्चों के भाषाई शब्दों को समझना - विद्यालय आने से पहले बच्चों की शापारी पुंजी

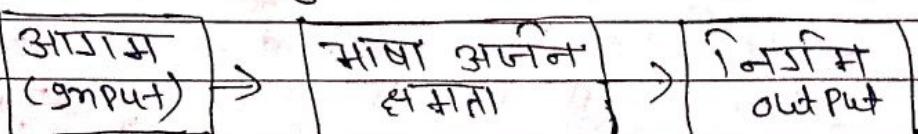
बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होता है। वो अपने माता-पिता, धर-परिवार हारा छोली गई बातों को सुनते हैं और उसे दौहराने का कोशिश करते हैं। जब वो शब्द बड़े होते हैं तो आस-पड़ोस, दौरतों के संपर्क में आते हैं। जिससे उनके भाषा कोशिश का विकास होता है। आज के बच्चे टेलीविजन, मोबाइल पर विडियो कोडन देखते हैं उससे वो भाषा अभियंत करते हैं। बच्चे जिसी जगतना सुनते हैं उतना ही नहीं छोलते हैं। वीडियो का भाषा का स्टेपन भी करते हैं। उन्हें व्याकरण का शब्द नहीं होता है। लोकन उनके भाषाई शब्दों में नियमबद्धता फैलकर होती है। इससे वह स्पष्ट होता है कि बच्चों में इस भाषा अभियंत करने की असीम शक्ति होती है।

इस तरह हम यह भी कह सकते हैं कि बच्चे का भाषा का विकास विद्यालय आने से पूर्ण बद्ध हो तक हो सका होता है। वह स्पष्ट नरीके से अपने बात को व्यक्त कर पाते हैं। और इसे आधार मानकर विद्यालय में शिक्षा दी जा सकती है।

* बट्टचे माषा कैसे सीखते हैं? (इकन२, चॉमरकी, वाग्होरसकी और पिंपाजे के विशेष भवित्वों में)

- i) इकन२ के अनुसार - इकन२ व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य से जुड़े हैं। व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार सीखने की प्रक्रिया में "उद्दीपन - प्रतिकृति - पुनर्बन्धन" का विशेष महत्व है। किसी भी स्थैतिक चीज की सीखने के लिए अथवा प्रतिकृति करने के लिए उद्दीपन की उपोर्थात आवश्यक है और जब बट्टचे को उस प्रतिकृति पर किसी प्रकार का पुनर्बन्धन प्राप्त होता है तो सीखने की प्रतिकृति पुष्ट होती है। इसका सिद्धांतापर्याप्त है कि सीखने की प्रतिकृति का मूल वातावरण में कही निहित है। इस व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार बट्टचे परिवेश में उपलब्ध माषा का अनुकरण करते हुए माषा सीखते हैं।
- ii) चॉमरकी के अनुसार - चॉमरकी बच्चों के माषा सीखने की जन-माजात क्षमता में विश्वास रखते हैं और यह अविकार करते हैं कि बट्टचे इसी क्षमता के सहारे अपने परिवेश से माषा को ग्रहण करते हैं। और विश्वासन मधिक संरचनाओं को आत्मसात करते हुए नर - नर वाक्य बनाते हैं। इनका मानना है कि माषा के बहुत अनुकरण के माध्यम से नहीं सीखती

जा सकती। सीमित वाक्य को अनुकर असीमित वाक्यों की बोलना। (भाषिक ओजिन लम्ता) इश्वर संभव है अर्थात् वर्चे अपने परिवेश में जो माषा सुनते हैं, उसका वो विश्लेषण करते हैं और फिर पर्याप्त करते हैं। इस प्रकार समाज से प्राप्त भाषिक ऑकड़ी पर वर्चे शूदृ अपने कुह नियम बना लौटे हैं। जिसे चामस की 'भृषु व्याकरण' कहते हैं।



जैसे- गड़ी के 'आप' और छोटी के तिरु (हुम) का पर्याप्त करना।

- लड़कों के तिरु (खाता है) लड़कियों के तिरु (खाती है) का प्रयोग करना।

- iii) वायरोटर्स की के अनुसार - वाइरोटर्स की का जानना है कि वर्चे अपने-अपने समुदाय के संपर्क में माषा सीखते हैं। इसका अर्थ यह है कि माषा की दर्वनियों की सार्विकता तभी है जब वह किसी वर्तुल विशेष की ओर संकेत करता है। जैसे - किसी समुदाय में 'जाता' का अर्थ 'मकड़ी का जात' तो कही। महती पकड़ने का जात है। इस तरह अत्या-अत्या समुदायों में एक शब्द के ही शब्द की अत्या-अत्या बातों के तिरु प्रयोग किया जाता है। अर्थात् वन के अनुसार (वर्चे की माषा समाज के साथ संपर्क का परिणाम है)

iv) पिंचाजे के अनुसार - जीव चोजे एक जीव वैश्वानिक की तरह माधा सीखने की च्यारण्यांति करते हैं। उनका मानना है कि मानसिक विकास में जन्मजात कारकों की मुखिया नहीं होती है। विकास का कारण है - जीव और वातावरण के बीच अंतःकृत्या इस अर्थ यह है कि जिस प्रकार बट्चा वातावरण के संपर्क से आता है और उसका विकास कमज़ोर होता है। उसी प्रकार उसकी माधा की होता है। **सिन्हाश** पिंचाजे के अनुसार सीखने के संदर्भ में आत्मसीताकरण (Assimilation) और समाचोजन (Accommodation) की प्रक्रिया महत्वपूर्ण होता है।

जैसे - (बट्चों को गाय दिखा कर कहा जाता है कि यह गाय है तो बट्चों सीच लेता है कि चार पैरों वाले जानवर की गाय कहते हैं। (Assimilation) और बिट्टली की गाय कहते हैं बाद में जब वे इसी बट्चों को गाय को गाय और बिट्टली की बिट्टली बोलते हैं तो वे दोनों में अंतर समझने की कोशिश करते हैं। उनके आकार, रंग, आवाज में अंतर पर ध्यान देते हैं। इस (Accommodation) समाचोजन कहते हैं।

* रिकनॉ - अनुकरण द्वारा

चौमार की - जन्मजात क्षमता

वाइगोर की - समुदाय के संपर्क से

पिंचाजे - जीव वे वातावरण के बीच

अंतःकृत्या

* भाषा अर्जित करने और भाषा सीखने में अंतर

भाषा अर्जित करना - हम जिस परिवेश में रहते हैं वहाँ कि भाषा हमारा शृङ्-ब-शृङ्-द सीख जाते हैं। हम यह भाषा व्याकरण के माध्यम से नहीं सीखते हैं। जैसे हमारी हिन्दी भाषी परिवेश में रहते हैं तो अवतः हम यह भाषा सीख जाते हैं।

भाषा सीखना - हम हिन्दी भाषी क्षेत्र में रहते हैं तो अवतः हिन्दी सीख जाते हैं। इसी भाषा अर्जित करना कहते हैं। किंतु जब हमारी इंग्लिश सीखते हैं तो इसी भाषा सीखना कहते हैं। इसी व्याकरण की मदद से सीखते हैं।

* विद्यालय में भाषा:- विषय के रूप में
— माध्यम भाषा के रूप में

विद्यालय में भाषा दो रूपों में प्रयोग किया जाता है। पहला विषय के रूप में समान्यतः विद्यालय में हिन्दी और इंग्लिश दो भाषा विषयों की पढ़ाई होती है। भाषा ही सरकार और उक्त की सीशली दी जाती है।

भाषा सिफे भाषा विषय तक ही समित नहीं होता है। बहिक ग्रह स्क माध्यम द्वारा है। इसरे विषय की सी पढ़ाने का अपने विचारों को घेवते करने का सी माध्यम होता है। जैसे विहार बोर्ड में हिन्दी भाषा का

प्रयोग किया जाता है। और CBSE बोर्ड में छात्रता व माधा का प्रयोग किया जाता है।

* माधा सीखने - सिखाने के उद्देश्यों की समझः कृत्यपनाशीलता, सूजनशीलता, संवेदनशीलता

कृत्यपनाशीलता - माधा के द्वारा बच्चे किसी विषय - वस्तु पर सीच सकते हैं। उसके बाइं रों विचार कर सकते हैं। उसकी कृत्यपना कर सकते हैं। इससे उनकी कृत्यपनाशीलता का विकास होता है।

सूजनशीलता - माधा के द्वारा बच्चों की सूजन करने की क्षमता का भी विकास होता है। वो कुछ सीमित शब्द सुनकर उसका विश्लेषण कर असीमित शब्द बोलते हैं।

संवेदनशीलता - बच्चे माधा का प्रयोग किया कर्त्ता के विश्वास के अनुसार करना भी सीख जाते हैं। शुश्री के माहील में शुश्रामा वात करना, दुःख के माहील में शात रहना, शहदों का चयन करना और उनका प्रयोग करना।

* माषा के आद्यार-मूत कोशलों - सुनना, बोलना,
पढ़ना तथा लिखने का विकास
— शुरूआती पढ़ना - लिखना

माषा के आद्यार-मूत कोशलों को सुबीपली
भाषा से जाना जाता है। अर्थात् सुनना,
बोलना, पढ़ना और लिखना। किसी भी माषा
की जो बच्चे पीरवेश में सीखते हैं। उसे
सबसे पहले सुनते हैं। वो सुनते हैं तभी
बोलने का कोशिश करते हैं। इस तरह से वो
शुरूआती सीख जाते हैं। अगर वो अनेक नहीं
तो वो बोलना कभी नहीं सीख पाएंगे। इसके
बाद ३-हें चित्र के माध्यम से पढ़ना सीखता
जाता है। शुरूआत में बच्चे अनुमान लगाकर
पढ़ते हैं। उसके बाद ३-हें लिखना सीखता
जाता है। बच्चे शुरूआत में कौपी - किताब
उलटते - पलटते हैं। फिर अनुमान लगाकर
चित्र के माध्यम से पढ़ने का कोशिश करते
हैं। उसके बाद वो कलम छोड़ कौपी पर
धसते हैं जिनसे उनका कलम या कुंसित
पर पकड़ बन जाता है। धीरे - धीरे वो
विभिन्न प्रकार की आकृति बनाना सीखते
हैं जैसे (लाडीन, गोल) इत्यादि। उसके बाद
उन्हें अक्षर लिखना सीखता जाता है।
उन्हें कक - कक करके अक्षर सीखता
जाता है। इस तरह धीरे - धीरे उनका
उम्र के हिसाब से विकास होता रहता है।

* लिपि और माषा

- मात्रों और विचारों को चेष्टने के सशब्दत माध्यम को माषा कहते हैं।
- किसी माषा की लिखने के लिए जिन चिन्हों का उपयोग होता है, उसे लिपि कहते हैं।
- सभी माषाओं की अलग - अलग लिपि होती है -
जैसे - हिन्दी - द्विनागरी
अंग्रेजी - शैमन
उड्ड - फारसी